SHODH PATRA
Multidisciplinary, Multi-Lingual, Peer Reviewed Open Access Journal
ISSN : 3048-7196, Impact Factor 6.3
Vol. 2, No. 1, Year 2025
Available online : https://shodhpatra.in/

छत्तीसगढ़ी और भोजपुरी लोकगीतों में लोकजीवन के सामाजिक यथार्थ और जनचेतना प्रसार की भूमिका का विवेचनात्मक अध्ययन

मुकेश चन्द्राकर, शोध विद्यार्थी, कलिंगा विश्वविद्यालय, नया रायपुर (छत्तीसगढ़)

डॉ. अजय कुमार शुक्ल, प्राध्यापक (हिन्दी), कलिंगा विश्वविद्यालय, नया रायपुर (छत्तीसगढ़)

Email : ajay.shukla@kalingauniversity.ac.in

सारांश -

छत्तीसगढ़ी लोकगीतों में आदिवासी-किसान जीवन की कठिनाइयाँ, उत्सव-प्रेम-उल्लास, प्रकृति-संघर्ष और सामाजिक समानता की भावना प्रमुख हैं, जबकि भोजपुरी लोकगीत श्रम, प्रेम, जाति-व्यवस्था और प्रवास की वास्तविकताओं को प्रतिबिंबित करते हैं। छत्तीसगढ़ और भोजपुरी लोकगीतों में बहुत सारी समानताएं भी है और भौगोलिक एवं क्षेत्रीय कारणों से कुछ असमानताएं भी हैं किन्तु ये लोकगीत न केवल सामाजिक विसंगतियों का प्रतिबिंब हैं, बल्कि जनजागरण का मजबूत माध्यम भी हैं। जिसका मुख्य स्वर सामाजिक यथार्थ और जनचेतना का प्रभावशाली प्रसार करना है।

बीज बिन्दु -

लोकगीत, लोकजीवन, सामाजिक यथार्थ, जनचेतना प्रसार,सांस्कृतिक साम्यता और भिन्नताएँ।

प्रस्तावना -

भारत का लोकजीवन उसकी असंख्य भाषाओं, बोलियों और सांस्कृतिक परंपराओं में रचा-बसा है। लोकगीत भारतीय समाज की आत्मा हैं। जो जीवन की संवेदना, श्रम की गरिमा, प्रेम की अनुभूति और संघर्ष की चेतना का संगीतात्मक रूप हैं। छत्तीसगढ़ी और भोजपुरी दोनों ही क्षेत्रीय संस्कृतियाँ कृषि, ग्राम्यजीवन और लोकसंस्कृति की समृद्ध परंपरा से अनुप्राणित हैं। दोनों क्षेत्रों के लोकगीतों में समाज की वास्तविकता, लोकजीवन की कठिनाइयाँ, स्त्री की स्थिति, श्रम की प्रतिष्ठा और सामूहिक चेतना का जीवंत चित्रण मिलता है। इस शोध का उद्देश्य इन दोनों भाषाई लोकगीत परंपराओं में निहित सामाजिक यथार्थ और जनचेतना के प्रसार की भूमिका का तुलनात्मक एवं विश्लेषणात्मक अध्ययन प्रस्तुत करना है।

© Shodh Patra

SHODH PATRA
Multidisciplinary, Multi-Lingual, Peer Reviewed Open Access Journal
ISSN : 3048-7196, Impact Factor 6.3
Vol. 2, No. 1, Year 2025
Available online : https://shodhpatra.in/

लोकगीतों का स्वरूप और लोकजीवन से संबंध -

लोकगीत किसी भी संस्कृति के सामाजिक दर्पण होते हैं, जो लोकजीवन के यथार्थ को सरल भाषा और लयबद्धता के माध्यम से व्यक्त करते हैं। छत्तीसगढ़ी और भोजपुरी लोकगीत मध्य भारत की क्षेत्रीय विविधता को प्रतिनिधित्व है। छत्तीसगढ़ी गीत बस्तर से सरगुजा क्षेत्र तक की आदिवासी-कृषक संस्कृति से जुड़ी हुयी हैं। जबकि भोजपुरी गीत पूर्वी उत्तर प्रदेश-बिहार और झारखंड के ग्रामीण जीवन को चित्रित करते हैं। ये दोनों लोकगीत सामाजिक यथार्थ (जैसे गरीबी, शोषण, लैंगिक असमानता) को उजागर करते हुए अप्रत्यक्ष रुप से जनचेतना का प्रसार करते हैं—चाहे वह सामाजिक न्याय की मांग हो या सांस्कृतिक पहचान का संरक्षण।

विद्वानों के अनुसार लोकगीत किसी व्यक्ति की नहीं बल्कि पूरे समाज की सामूहिक चेतना की उपज है। ये लोक की अनुभूति, आस्था, रीति-नीति और संघर्ष की कथा को स्वर देते हैं। छत्तीसगढ़ी और भोजपुरी लोकगीतों में जीवन के लगभग सभी प्रसंगों — जन्म, विवाह, खेती, बरसात, मेला, त्यौहार, मृत्यु आदि का मार्मिक चित्रण है। इन गीतों का उद्देश्य केवल मनोरंजन नहीं, बल्कि सामाजिक संदेश और जनजागरण भी है। लोकगीत लोकभाषा में ही लोकभावना को जन-जन तक पहुँचाने का माध्यम हैं।

छत्तीसगढ़ी लोकगीतों में सामाजिक यथार्थ -

छत्तीसगढ़ी लोकगीतों की मुख्य विशेषता है — सादगी, संवेदनशीलता और लोकजीवन का यथार्थ चित्रण। यहाँ के गीतों में कृषक जीवन, आर्थिक विषमता, स्त्री की पीड़ा, प्रकृति और समाज का सामंजस्य, तथा श्रम की महिमा प्रमुख हैं -

"धान रोपें गा तोर मइया, माटी में रचे हौं..."

इस पंक्ति में किसान के श्रम की पवित्रता और धरती से जुड़ाव का भाव झलकता है। छत्तीसगढ़ में सबसे अधिक धान की उपज होती है। धान रोपनी ,कृषक संस्कृति का सबसे बड़ा पर्व होता है। धान रोपनी या कटाई के समय महिलाएं सामूहिक रुप से लोकगीतों को गाकर लोकसंवेदना को स्वर देने का काम करती हैं।

छत्तीसगढ़ी लोकगीतों में लोकजीवन की कठोर वास्तविकताएँ प्रमुखता से झलकती हैं। ये गीत कृषि-चक्र, जंगल-संघर्ष और सामाजिक असमानता को व्यक्त करते हैं। उदाहरणस्वरूप, "सुआ गीत" या "ददरिया" में भी लोकजीवन के यथार्थ के चित्र दिखलाई पड़ते हैं-

तरि हरि ना ना मोर न नरि ना ना सुबे नंदन

सुबे नंदन बन म मोर मांदर छोलि चांच दे

बढ़ई के केहों बढ़ई मोर भईया सूबे नंदन

© Shodh Patra

SHODH PATRA
Multidisciplinary, Multi-Lingual, Peer Reviewed Open Access Journal
ISSN : 3048-7196, Impact Factor 6.3
Vol. 2, No. 1, Year 2025
Available online : https://shodhpatra.in/

सूबे नंदन बन म मोर माँदर छोलि चांच दे।

सोलहा के केहों सोलहा मोर भईया सूबे नंदन

सूबे नंदन बन म मोर माँदर छा-तोपि दे।

लोहरा के केहेंव लोहरा मोर भईया सूबे नंदन

सूबे नंदन बन म, माँदर बर चुटका गढ़ि दे।

छत्तीसगढ़ के आदिवासी गीतों में प्रकृति-पूजा का विशेष महत्व है। सुआ गीतों के साथ साथ करमा और सरहुल जैसे गीतों के माध्यम से महिलाओं के द्वारा सामाजिक विसंगतियों पर तीव्र प्रहार करके सामाजिक जागरुकता फैलाने का महत्वपूर्ण कार्य किया जाता है -

पइयां परत हौं मैं चंदा सुरूज के,

रे सुवना तिरिया जनम झनि देय

तिरिया जनम मोर अति रे कलपना,

रे सुवना जहंवा पठई तहं जाए

अंगठी मोरी मोरी, घर लिपवावै, रे सुवना।

सामाजिक यथार्थ के रूप में लैंगिक भूमिकाएँ भी प्रमुख हैं। "पंडवानी" शैली के गीतों में महाभारत की कथाओं से प्रेरित होकर स्त्री-शोषण की आलोचना की जाती हैं। गुरु घासीदास और धनी धर्मदास से प्रेरित होकर पंथी गीत और अन्य लोकगीतों के माध्यम से अंधविश्वास, सामाजिक रुढि और कट्टरता के खिलाफ संदेश दिया जाता है और लोकचेतना में समानता और सामाजिक समरसता की भावना को जगाया जाता हैं-

काकर घर परे निस अँधयारिया

काकर अँगना दियना बरय हो,

मुरख अँगना निस अँधयारिया

ज्ञानी के अँगना दियना बरय हो।

विवाह गीत, फाग गीत, बिदाई गीत, देव गीत, पंडवानी, और कर्मा जैसे लोकरूपों में सामाजिक संरचना और जीवन-संघर्ष का दर्शन होता है। छत्तीसगढ़ी लोकगीतों में जातिगत विषमता के विरुद्ध स्वर भी सुने जाते हैं। वे दलित, स्त्री और श्रमिक वर्ग की आवाज़ को गीत के माध्यम से जनसामान्य तक पहुँचाते हैं।

© Shodh Patra

SHODH PATRA
Multidisciplinary, Multi-Lingual, Peer Reviewed Open Access Journal
ISSN : 3048-7196, Impact Factor 6.3
Vol. 2, No. 1, Year 2025
Available online : https://shodhpatra.in/

भोजपुरी लोकगीतों में सामाजिक यथार्थ -

भोजपुरी लोकगीत अधिक व्यापक हैं, जो बिहार-यूपी-झारखंड के ग्रामीण जीवन, प्रवास समस्या और जाति-व्यवस्था को चित्रित करते हैं। "चैता" और "बिरहा" गीतों में मजदूरों की दयनीय स्थिति वर्णित है:

गरीबवन के बेटिया चरावेली बकरिया, भोरहीं बधरिया के ओर।

अंचरा में बान्हि के फुटहा चबेनवा चली जाली फजिरे सबेर

मथवा प बतवा के टूटेला पहड़वा कहियो जे कइली अबेर।

कतहीं त नदिया सुखइली बरखवा में जेठवो में कतहीं अथाह

केकरो लोकनिया बा लाखन करोड़वा के केहू के भुलाइल बाटे हो राह।

यह प्रवासी मजदूरों की यथार्थ को दर्शाता है, जो औपनिवेशिक काल से चली आ रही है। प्रेम-गीतों में जाति-भेदभाव का प्रतिकार दिखता है, जहाँ निम्न-जाति के प्रेमी-प्रेमिकाओं की पीड़ा सामाजिक संरचना की आलोचना करती है।

इसी प्रकार महिलाओं की दशा "सोहर" या "झूमर" गीतों में झलकती है, जहाँ दहेज-प्रथा और पितृसत्ता का यथार्थ उभरता है। भोजपुरी गीतों की लोकप्रियता (फिल्मों और मीडिया के माध्यम से) उन्हें जनचेतना प्रसार का शक्तिशाली माध्यम बनाती है,भोजपुरी लोकगीत भारतीय उत्तर-पूर्वी लोकसंस्कृति की आत्मा हैं। इन लोकगीतों में गांव की मिट्टी, प्रेम, परिश्रम, त्याग और सामाजिक नैतिकता का अद्भुत संगम है -

आज के दिनवा सुहावन, रतिया लुभावन हो,

ललना दिदिया के होरिला जनमले, होरिलवा बडा सुन्दर हो॥

नकिया त हवे जैसे बाबुजी के, अंखिया ह माई के हो

ललन मुहवा ह चनवा सुरुजवा त सगरो अन्जोर भइले हो॥

सासु सुहागिन बड भागिन, अन धन लुटावेली हो

भोजपुरी गीतों में प्रवासी मजदूरों की पीड़ा, स्त्री का त्याग, खेतिहर जीवन की कठिनाइयाँ, और सामूहिक एकजुटता के भाव दिखाई देते हैं-

" ननदी झगरवा कइली, पिया परदेश गइले।

किया हो रामा, भउजी रोवेली छतिया फाटे हो राम। "

© Shodh Patra

SHODH PATRA
Multidisciplinary, Multi-Lingual, Peer Reviewed Open Access Journal
ISSN : 3048-7196, Impact Factor 6.3
Vol. 2, No. 1, Year 2025
Available online : https://shodhpatra.in/

इस पंक्ति में स्त्री के मन का दर्द, वियोग और सामाजिक स्थिति का यथार्थ झलकता है। भोजपुरी के सोहर, बिरहा, कजरी, चैती और बारहमासी लोकगीतों में व्यक्ति और समाज के गहरे संबंध परिलक्षित होते हैं -

माई रे माई बिहान कोई कहिया

भेड़ियन से खाली सिवान होई कहिया।

हमरा के कागज के नइया थमाई,

अपने आकाशे जहजिया उड़ाई

अंतर के जंतर गियान होई कहिया.....माई रे माई।

जनचेतना प्रसार की भूमिका -

दोनों लोकभाषाओं के लोकगीत जनचेतना के वाहक हैं। छत्तीसगढ़ी लोकगीत जनजातीय और ग्रामीण समुदाय को सामाजिक समानता, श्रम के सम्मान और स्त्री गरिमा की चेतना प्रदान करते हैं। भोजपुरी लोकगीत प्रवासी जीवन, आर्थिक शोषण और पारिवारिक मूल्य-संरक्षण की चेतना जगाते हैं। दोनों परंपराओं में गीत सामाजिक एकता, धार्मिक सहिष्णुता, और श्रमिक संस्कृति के प्रवक्ता हैं। लोकगीतों ने शिक्षा, नैतिकता और सामूहिक चेतना के प्रसार में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

लोकगीतों में स्त्री, श्रम और समाज की चेतना -

दोनों भाषाई क्षेत्रों में स्त्री लोकगीतों की केंद्रीय पात्र है। वह कभी माँ है, कभी प्रेमिका, कभी श्रमिक और कभी सामाजिक परिवर्तन की वाहक के रुप में दिखलाई पड़ती है। जो अपनी पीड़ा, स्वप्न और प्रतिरोध को गीत के माध्यम से व्यक्त करती है।

छत्तीसगढ़ी गीतों में —

"तोर मया ला धरती गवाही देवय"।

जो प्रेम और निष्ठा का प्रतीक है। जहां धरती की साहिष्णुता,समन्वय, विश्वास और उसके निस्वार्थ भाव का प्रेम की विश्वसनीयता के समकक्ष माना गया है।

भोजपुरी गीतों में —

"सासु जी से झगरा भईल, अब का करीं हो राम..."

© Shodh Patra

SHODH PATRA
Multidisciplinary, Multi-Lingual, Peer Reviewed Open Access Journal
ISSN : 3048-7196, Impact Factor 6.3
Vol. 2, No. 1, Year 2025
Available online : https://shodhpatra.in/

यह घरेलू संघर्ष और स्त्री की मनोदशा का प्रमाण है। जहां सामाजिक स्थिति में गरीबी,प्रवास और शोषण के बावजूद प्रियतम पति से दूर होने के बाद महिलाओं को अपने घर में भी जाना सुनना पड़ता है।

इन दोनों क्षेत्र की लोकगीतों में स्त्री जनचेतना की वाहक के रूप में उभरती है। जो संघर्षरत है, निर्विकार भाव से श्रम करती है,प्रेम करती है, सुख-दुख दोनों को ग्रहण करते हुए मुख्य हो उठती है और अपने खिलाफ शोषण और सामाजिक व्यवस्था पर लोकगीतों के माध्यम से अपने सुख ही नहीं बल्कि अपनी व्यथा को स्वर प्रदान करती हैं

सांस्कृतिक साम्यता और भिन्नताएँ -

दोनों लोकगीत परंपराओं में बहुत समानताएँ हैं। जिसमें शोषण, श्रम और प्रकृति-संघर्ष का चित्रण मुख्य हैं किंतु कुछ भिन्नताएँ भी हैं ,जो क्षेत्रीय एवं भौगोलिक कारणों से हैं। छत्तीसगढ़ी गीत आदिवासी-केंद्रित और प्रकृति-मुखी हैं, जबकि भोजपुरी गीत शहरी-प्रवास,जाति-राजनीति एवं स्त्री शोषण की वस्तुस्थिति को दर्शाता हैं।

जनचेतना प्रसार में भूमिका:

छत्तीसगढ़ी और भोजपुरी दोनों लोकगीत शोषण के विरुद्ध विद्रोह की प्रेरणा देते हैं। छत्तीसगढ़ी में "सुआ" गीत स्वतंत्रता संग्राम के साथ साथ अनेक जन आंदोलन में प्रयुक्त हुए हैं जबकि भोजपुरी में "बिरहा-चैती-फगुआ जैसे गीत किसान आंदोलनों और जन आंदोलन का हिस्सा बने हैं। वस्तुत: ये गीत मौखिक इतिहास के वाहक हैं, जो वैश्वीकरण के दौर में लोक की पहचान को मजबूत करते हैं। विवेचना से पता चलता है कि लोकगीत निष्क्रिय वर्णन नहीं, बल्कि सक्रिय प्रतिरोध के भी साधन हैं, जो जनचेतना के आकांक्षा को स्वर प्रदान देते हैं।

यह कहा जा सकता है कि छत्तीसगढ़ी और भोजपुरी लोकगीतों में प्रमुख विषय श्रम, प्रकृति, समानता, प्रेम, प्रवास, सामाजिक संघर्ष और चेतना का स्वर है। दोनों लोकगीत की परंपराएँ क्षेत्रीय भिन्नताओं के बावजूद मानवता, प्रेम, श्रम और सामाजिक समरसता का संदेश देती हैं।

निष्कर्ष -

कुल मिलाकर कहा जा सकता है कि छत्तीसगढ़ी और भोजपुरी लोकगीत केवल कलात्मक अभिव्यक्ति नहीं, बल्कि सामाजिक दस्तावेज़ हैं। इनमें लोकजीवन के यथार्थ के साथ-साथ जनचेतना का स्पष्ट प्रतिबिंब मिलता है। इन लोकगीतों ने समाज में नैतिकता, समानता, श्रम-संस्कृति और स्त्री सम्मान की भावना को जागृत किया है। ये गीत आज भी सामाजिक परिवर्तन और संस्कृतिक एकता के प्रभावी माध्यम हैं।

© Shodh Patra

SHODH PATRA
Multidisciplinary, Multi-Lingual, Peer Reviewed Open Access Journal
ISSN : 3048-7196, Impact Factor 6.3
Vol. 2, No. 1, Year 2025
Available online : https://shodhpatra.in/

छत्तीसगढ़ी और भोजपुरी लोकगीत लोकजीवन के सामाजिक यथार्थ को जीवंत रूप से चित्रित करते हुए जनचेतना प्रसार की महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। ये गीत शोषण की विसंगतियों को उजागर कर सामाजिक परिवर्तन की प्रेरणा देते हैं। इस प्रकार यह कहा जा सकता है कि "छत्तीसगढ़ी और भोजपुरी लोकगीत लोकजीवन के दर्पण हैं, जिनमें समाज का यथार्थ और जनचेतना की धारा अविरल प्रवाहित होती है। "

संदर्भ सूची -

1. शर्मा, रामविलास-लोक साहित्य और संस्कृति,राजकमल प्रकाशन, 1985।

2. द्विवेदी, हजारी प्रसाद - हिंदी साहित्य की भूमिका। राजपाल एंड सन्स, 1950।

3. मिश्र, विश्वनाथ - छत्तीसगढ़ी लोकगीत, मध्य प्रदेश हिंदी ग्रंथ अकादमी, 1990।

4. सिंह, रामनाथ. भोजपुरी लोकगीत। वाणी प्रकाशन, 2005।

5.पांडेय, रमेशचंद्र — भारतीय लोकसाहित्य का स्वरूप एवं संवेदना, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली।

6.तिवारी, अशोक कुमार — छत्तीसगढ़ी लोकगीतों में लोकजीवन की अभिव्यक्ति, रायपुर विश्वविद्यालय प्रकाशन।

7.मिश्र, गोविंदप्रसाद — भोजपुरी लोकसाहित्य का समाजशास्त्र, वाराणसी।

8.ठाकुर, तेजराम — छत्तीसगढ़ी लोकसंस्कृति और गीत परंपरा, बिलासपुर विश्वविद्यालय।

9.शर्मा, रामसेवक — भारतीय लोकगीतों में सामाजिक यथार्थ, इलाहाबाद विश्वविद्यालय।

10.शुक्ल, डॉ. अजय कुमार -छत्तीसगढ़ी और भोजपुरी लोकगीतों का तुलनात्मक अध्ययन,केल्हारी जर्नल।

© Shodh Patra